* नदीय प्रक्रम से आप क्या समझते हैं? तीन अपरदीत व चार निक्षेपित नदीय स्थलाकृतियों का विवरण दें?

=> नदीय प्रक्रम का तात्पर्य नदी के उन कारक हैं जिसके माध्यम से नदी अपरदन की क्रिया संपादित करती है नदी के ~~अपरदन~~ के द्वारा अपरदन नदी के बहाव के गति, नदी मे जल की मात्रा, नदी के मार्ग मे आने वाले ढाल, नदी के लम्बाई और चौड़ाई पर निर्भर करता है।

यदि नदी की बहाव की गति दुगुनी हो जाय तो नदी द्वारा अपरदन की दर चार गुनी हो जायेगी,

यदि ~~नदी~~ नदी मे जल की मात्रा अधिक है तो वह अपरदन भी अधिक करेगी और जल की मात्रा कम होने पर अपरदन की क्रिया मंद होगी।

नदी के अपरदन पर नदी के मार्ग मे आने वाले ढाल ~~ढाल~~ पर भी निर्भर करता है, यदि नदी की ढाल अधिक होगी तो नदी द्वारा अपरदन का कार्य भी तेजी से होगी यदि ~~नदी~~ ढाल कम होगी तो अपरदन भी मंद गति से होगी। पुनः नदी के लंबाई भी भू-आकृति को निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है यदि नदी चौड़ी है और उसका बहाव भी तेज है तो वह अपरदन का कार्य भी उतनी तेजी से करेगी

इन प्रक्रियाओ द्वारा नदी जिन प्रकार के ~~स्थल~~ स्थलाकृतियो का विकास करती है उसे दो वर्गों मे रखा जाता है)

(I) अपरदनात्मक स्थलाकृतियाँ (II) निक्षेपात्मक स्थलाकृतियाँ

(I) अपरदनात्मक स्थलाकृतियाँ - (1) जल प्रपात — जब किसी स्थान पर नदियों का जल ऊँची ढाल से गिरता है अर्थात् निलम्ब के ऊपरी भाग से गिरता है तो उसे जल प्रपात कहा जाता है।

नदी के मार्ग मे कोमल तथा कठोर चट्टाने आती हैं, जिसमे कोमल चट्टाने शीघ्र ही कट जाती हैं और उस स्थान पर नदी की तलहटी नीची हो जाती है। इस प्रकार नदी का जल ~~नीचे हो जाती~~ है तीव्र गति से नीचे की ओर गिरता है

Scanned with CamScanner

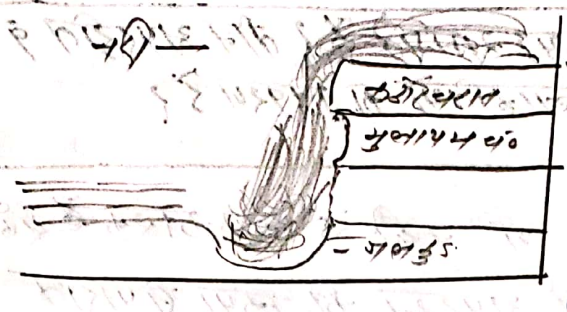

जल प्रपात
जल प्रपात कई प्रकार के होते हैं (i) समान्य जल प्रपात
(ii) प्रपाती जल प्रपात
(iii) सोपानी जल प्रपात
(iv) पठारी जल प्रपात
(v) निक प्वाइंट जल प्रपात

समान्य जल प्रपात नदी के समान्य जीवन इतिहास में चट्टानों की में विभिन्नता के कारण होता है, प्रपाती जल प्रपात निर्माण लटकती घाटी के नीचे से बड़ी ~~नदी~~ हिमनदी के तली में पानी गिरने से होता है, पठार के किनारे पर पठार के ऊपर से पानी के गिरने से पठारी जल प्रपात का निर्माण होता है

② नदी वेदिकाये River Terraces

नदी अपनी क्रमबद्ध अवस्था के बाद बाढ़ का मैदान बनाती है नदी का बड़ा भाग होता है जिसमें बाढ़ का मैदान निरचय के जलोढ़ मिट्टी तथा बजरी का निक्षेप होता है, अचानक सागर तल में परिवर्तन आने के कारण नदी में नवोन्मेष आजाता है जिससे नदी की निम्न कटाव की क्षमता बढ़ जाती है परिणाम स्वरूप घाटी का गहरा होना प्रारम्भ हो जाती है, ~~अब नदी पुरानी घाटी~~

अब नदी पुरानी चौड़ी घाटी में नवीन व संकरी घाटी का निर्माण करती है
प्राचीन घाटी नयी घाटी से सोपान अथवा सीढ़ीदार अलग होती है नदी वेदिकाएं कहलाती हैं

③ घाटियां valley विभिन्न प्रकार की घाटियाँ ~~नदी नदी~~ के अपकर्षण, जलगति क्रिया घोलीकरण, सन्निकर्षण, प्रक्रिया द्वारा निर्मित होती हैं अपकर्षण क्रिया दो प्रकार से होती है (i) लम्बवत अपकर्षण (ii) क्षैतिज अपकर्षण

यदि लंबवत अपकर्षण घाटियों को गहरा करती है वह क्षैतिज अपकर्षण घाटियां को चौड़ी करती है

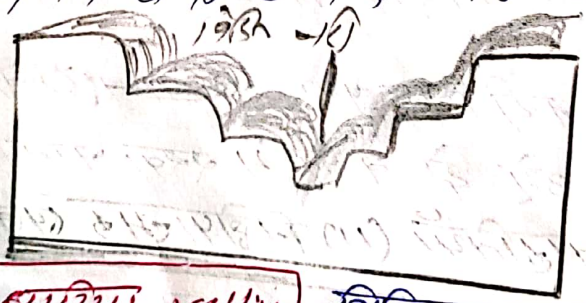

(4) **जलगर्तिका** - नदी के बहते जल में नदी के तली में जब कोई मुलायम चट्टान आती है तो वह अपरदित हो जाती है और वहाँ एक छोटी सी गर्त का निर्माण हो जाती है नदी का जल इस गर्त में घूमने लगता है जिससे गर्त और गहरी और चौड़ी होजाती है इस प्रकार ~~जल के~~ नदी की तलहटी पर जल द्वारा निर्मित इस गर्त को जलज गर्तिका कहते है।

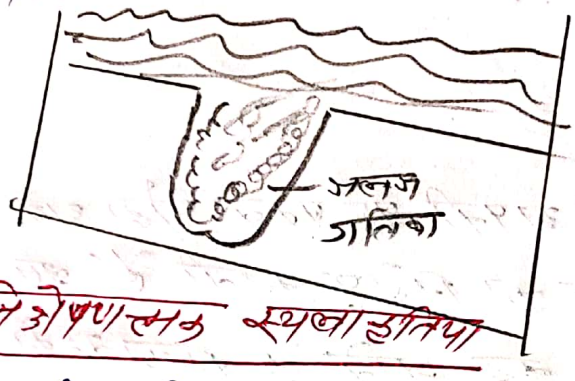

(ii) निक्षेपणात्मक स्थलाकृतियाँ

(i) **जलोढ़ शंकु** - जलोढ़ शंकु नदी के प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करने के सूचक होते है पर्वतों से उतरकर ~~जब~~ नदी जब मैदान में प्रवेश करती है तो नदी के वेग व ढाल अचानक कम होजाती है जिससे उसकी भार वहन करने की क्षमता कम होजाती है तब वे पर्वतों के आधार ~~पर~~ में पदार्थ मलबा का निक्षेपण शंकु के आकार में करती है इनके निचले तल में ~~बड़ी बोल्डर~~ बड़े शिलाखण्ड एवं ऊपर बजरी और इसके ऊपर महीन रेत का निक्षेप होता है

(ii) **गिरिपदीय जलोढ़ मैदान**

जलोढ़ शंकुओं का विस्तार होने से होता है ऊँचाई में विस्तार होने पर वे जलोढ़ शंकु की रचना करते है पार्श्व की ओर विस्तार होने से ये परस्पर मिल जाते है जिससे गिरिपदीय जलोढ़ मैदान बनते है। हिमालय की ~~तराई~~ ~~...~~ तलहटी में ऐसे मैदान विशेषत: उ. भारत में है

(iii) **नदी विसर्प**

जब नदी अपनी मध्यवर्ती भाग में सीधी नहीं बहती बल्कि वह साँप की भांति बलखाती जाती है जिसे नदी विसर्प कहा जाता है

मैदान में ढाल प्रवणता कम होजाने के कारण नदी की वेग और उसकी परिवहन क्षमता कम होजाती है।

Scanned with CamScanner

तब वह अपने साथ लाये अतिरिक्त जलोढ़ को
पार्श्वों पर निक्षेप करने लगती है, मन्द प्रवाह के कारण
मार्ग में आया छोटी भी बाधा आने पर वह मुड़ जाती है
और नदी अपने बाहरी तट पर अपरदन और भीतरी
तट पर निक्षेपण करती है इससे विसर्पों का क्रमिक
विस्तार होता है।

(12) प्राकृतिक तटबंध — नदी अपनी परिपक्व, प्रौढ़ा अवस्था
में अपने तटों पर जलोढ़ का निक्षेप करती है। वर्षा
काल में जल की मात्रा बढ़ जाने के कारण तट को
तोड़कर दूर तक बहने लगती है। बाढ़ का जल कई
स्तरों में जम जाती है। वर्षा काल में ये नाना
अपनी मार्ग बदलने लगती है ऐसे डेल्टा प्रगतिशील
होते हैं जो क्रमशः सागर की ओर अग्रसर होते हैं।
नील, गंगा, ह्वांगहो, राइन, वोल्गा, डेन्यूब, मो.सी.
आदि नदियों के उदाहरण हैं।